रिकॉर्ड :– (य)ह वक्त जा रहा है..... ॐ पिताश्री 18/6/1965
ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। बाप ने क्या कहा? क्या करना है? क्योंकि मौत आ रहा है। क्या करे बाबा? अरे, तुम सुनते न(हीं) हो। जब मरने (का) समय होता है तो कहते हैं राम–राम कहो, और सबको त्याग कर राम कहो। यह राम का नाम साथ जाएगा– ऐसे कहते हैं। तुम बच्चे जानते हो, (अ)भी यह सबके मौत का समय है। यहाँ तुमको यथार्थ रीति समझाया जाता है– बच्चे, बाप (को) याद करो। अभी जल्दी करो, पापों का बोझा सिर पर बहुत है जन्म–जन्मांतर का। वह कोई ऐसे (ही) नहीं (उतर) जावेंगे। मेहनत लगती है। अनेक जन्मों का बोझा है सो सिवाय याद के भस्म हो नहीं (सकते)। पु(ण्य) आत्मा नहीं बन सकते। घड़ी–2 बाबा कहते हैं– बच्चे, मन्मनाभव। बाबा ..... फिर क्या होगा? मद्याजीभव। समय बहुत थोड़ा है। तुम याद बहुत कम करते हो, फिर पिछाड़ी में ना पापों का बोझा उतरेगा, ना पद पा सकेंगे। इससे कोई फायदा नहीं। समझते तो हो मौत की तैयारी हो रही है। बाबा ने समझाया था– रुद्रज्ञान य(ज्ञ) विनाश ज्वाला ज़रूर निकलनी चाहिए। जब शरीरों का विनाश हो तब आत्मा को मुक्ति–जीवनमुक्ति मिले। तो पीवर(तीव्र) पुरुषार्थ करनी चाहिए। ऐसे नहीं कल करेंगे, परसों करेंगे। ..... नहीं, हर एक बात में टाइम मुकर्रर किया जाता है। जितना बाबा की याद में रहें(गे) उतनी कमाई बहुत होगी। .... रहना चाहिए। तुम जानते हो, बाबा हमें अमरलोक का मालिक बनने का राय देते हैं। ऐसे नहीं कि अभी यह करना है, यह करना है। नहीं, मौत सामने आ जाएगा, फिर क्या कर सकेंगे! आगे थोड़ा कुछ हुआ तो देखो क्या हाल हो गया! करोड़ों आदमी मरे। अभी थोड़ी (देर) हुई तो बहुत मरते जावेंगे। पापों का बोझा सिर पर बहुत है। बाबा को याद ना करते हो तो फिर बुद्धि को माया पकड़ लेती है। बाबा भी माया को कहते हैं इनको पकड़ो नाक से। जब तक इकट्ठे रहते हो, भल यह गृहस्थ व्यवहार अर्थ करो; परन्तु अमृतवेले वा टाइम मुकर्रर करो। बाबा को बहुत याद करना है। चलते–2 फिर वह नशा कम हो जाता है। इस शरीर को भूलते जाना है। अपन को आत्मा समझना है। शरीर भारी है, आत्मा तो बहुत हल्की है। आत्मा कितना तीखी उड़ती है। आत्मा जैसी फास्ट चीज़ कोई होती नहीं। यहाँ से लन्दन अथवा अमेरिका जैसे एक सेकेण्ड (लग)ता है। सेकेण्ड मुक्ति–जीवनमुक्ति में लगता है। सेकेण्ड लगता है एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर लेने में। बाबा कहते हैं– बच्चे, अभी टाइम बहुत थोड़ा, तुम लोग बहुत गफलत करते हो। अमृतवेले का टाइम बहुत अच्छा है। जितना हो सके बाबा को याद करते रहो। यह तो बच्चों को निश्चय है, हम एक बाप के बच्चे भाई–बहन हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे और बच्चियाँ हैं। शिवबाबा की संतान हैं। फिर हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है। पुरुषार्थ अनुसार ही पद पावेंगे। वह एक प... का पद पा ना सके। बाप के साथ बहुत लव रखना है। स्त्री का पति (में) बहुत लव होता तो पति के पिछाड़ी चिता पर चढ़ती है। जीते जी चिता पर ..... हम पति लोक में जावें। अभी तुम ज्ञान चिता पर बैठे हो और तुमको याद करना है पतियों के पति शिवबाबा को। पति की याद में रहते हैं तो पति के लोक में चले जाते हैं। तो बाप कहते हैं– हे बच्चे अथवा हे सजनियाँ! तुम साजन को बहुत भूले हुए हो। भूलने के कारण जन्म–जन्मांतर तुमने बहुत धक्के खाए हैं। बहुत गुरु किए हैं। धक्के खाते–2 तुम बहुत थक गए हो। तुम सब पार्वतियाँ भी हो ना। आधा कल्प तुमने बहुत धक्के खाए हो(हैं), कहाँ से भी रास्ता नहीं मिला। जैसे लखनऊ में बारादरी है। फाटक पर एक खड़ा रहता है। रास्ता वही बता सकते हैं, नहीं तो (मूँझ (पड़ते) हो। तो यह भक्तिमार्ग का दिखाते हैं– जहाँ से भी जाओ सभी

रास्ते के साथ के जाने के हो, कहाँ से भी जाओ; परन्तु नहीं, रास्ता बाप ही बतलाता है। कहा जाता है– हे पतित–पावन, हे सद्गति दाता, हमें रास्ता ब(ता)ओ। हम अंधे हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो, भीष्मपितामह आदि सभी अंधों की लाठी कौन हैं। कन्याओं द्वारा बाण मरवाए (हैं)। तुम जानते हो, सभी मरने वाले हैं। तुमको अब यह ज्ञान अमृत मिल रहा है। बाप कहते हैं– बच्चे, तुमको मुख में कोई पानी नहीं देता है, यह है ज्ञान की बात, बाप को याद करना है। पापों का बोझा बहुत है। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। पिछाड़ी के टाइम जोश आता है कि अभी जल्दी करे, अब ना करेंगे तो क्या हाल होगा। डर के मारे जल्दी करेंगे। समझेंगे मौत सिर पर खड़ा है। कर्मभोग तो बहुत है ना। कितनी मेहनत करते हैं तो भी कर्मातीत अवस्था ना हुई है। कर्मातीत अवस्था हो जाय फिर तो यह शरीर न रहे। बाप (कह)ते हैं देह के सहित देह के सभी संबंधियों आदि भुलवाना है। सन्यासी लोग सन्यास करते हैं तो ऐसे नहीं कि उनकी बुद्धि सब निकल जाते हैं। यह तो स्त्री को विधवा बना जाते हैं। कर ही क्या सकते हैं। सन्यासी भी जब आवेंगे तो समझाना है। बाप है ज्ञानेश्वर। कहते हैं, यह है मृत्युलोक। अब यहाँ बच्चे पैदा नहीं करने हैं। यहाँ बिच्छू–टिं(डन) ही पैदा होंगे और तुम्हारे कुल को खराब करेंगे। बहुत कहते हैं एक बच्चा हो। इस समय (के) बच्चे तो खून पी लेते हैं, बाप बच्चों का; क्योंकि बाप बच्चों को काम (चिता पर) चढ़ा देते हैं। अब बाप कहते हैं, यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। अब यह शादी आदि की बातें मत करो। हाँ, राय भल पूछो। बाप बतलावेंगे ....। बाप कहे और वह ना माने तो वह भी ठीक नहीं। कुछ भी ना हो तो राय लो। ऐसे नहीं, बाबा कहते हैं शादी ना करो। बड़ा युक्ति से समझाते हैं। ज्ञान में है, अगर बच्चा बाप की आज्ञा ना मानता है तो वह पूत नहीं, (भूत) है। यह तो बड़ा बेहद का बाप है। उनके फरमान पर चलना है। साथ में धर्मराज भी खड़ा है। ... सारी दुनिया दुश्मन बनेगी। मित्र–संबंधी आदि सब बदल जावेंगे। विकार की बात पर सब दुश्मन बन पड़ते हैं; क्योंकि वह रावण की मत पर। अगर बाप की मत पर ना चले तो सौणा दण्ड भोगना पड़ेगा। ईश्वर की मत को उल्लंघन किया तो क्या हो जाएगा। ..... आधा कल्प से पुकारते आए हो– बाबा, आकर हमको पतित से पावन बनाओ। दुख हर कर सुख दो। दुख (हर)ने बाद क्या होगा? शान्तिधाम–सुखधाम चले जावेंगे। तो बाप बच्चों को समझाते हैं, ठण्डे मत बनो। एक/दो को उठाना है। बाबा की याद में रह .... (भल) एक/दो के सामने बैठो तो भी हर्जा नहीं। देखना है मैं कहाँ चलायमान न हो जाऊँ। वह हठयोगी भी एक/दो के सामने रह अपनी परीक्षा लेते हैं। देखें, कहीं आग तो नहीं लगती है। इसको हठयोग कहा जाता है। कर्म–इन्द्रियों को वश करने हठयोग करते हैं; परन्तु ठहर थो(ड़े) ही सकते हैं। फिर जंगल में चले जाते कितना भी हठयोग करें। यह तो बात ही न्यारी है। बाप बड़ा युक्ति से समझाते रहते हैं। सन्यासी कहते हैं, इकट्ठे रहने में आग ज़रूर लगेगी। हम कहते हैं, इकट्ठे रहते पवित्र रह सकते हैं। तुम अपनी ... . सकते हो। हर प्रकार की शिक्षा मिलती रहती है। उनको कोई शिक्षा नहीं मिलती है। यह सारी ज्ञान (की) बातें। बाप कहते हैं, मुझ बाप को याद करो। अभी तुमको वापस जाना है। एक को ही बुद्धि में रखना है। तुम जानते हो, हम खुदाई खिदमतगार हूँ। हमारे ऊपर बड़ी रिस्पॉन्सिबिलिटी है। बाप के कुल का नामाचार निकालना है। इसलिए ही बाप बच्चों (को) देते हैं कि इस भारत को स्वर्ग बनावे दिखावे, ईश्वरीय कुल को कलंक ना लगावे। अभी तो माया रावण का राज। काली रात हो गई है। अब फिर यह माया का राज खलास हो(ना) है। बच्चे जानते हैं, आधा कल्प ईश्वरीय राज, आधा कल्प माया का राज च(लता) है

P.T.O.

बाप को कहते ही हैं हेविनली गॉड फादर (ओनली गॉड फादर) हेविन स्थापित करने वाला। कहते भी हैं भगवान–भगवती का राज था। किसने स्थापन किया? ज़रूर भगवान ने स्थापन किया होगा। कैसे स्थापन किया, यह कोई भी नहीं जानते हैं। कल की बात है। ल०ना० का राज था, जिनके फिर जड़ यादगार मंदिर बने हैं। यह राजाई इनको किसने दी? बाप ने। वहाँ कोई राजाओं ने तो राजयोग नहीं सीखा। अब तुम राजयोग सीख रहे हो। यहाँ तुम्हारे कर्म विकर्म होते हैं। सतयुग अमरलोक में कर्म अकर्म हो जावे तो वहाँ माया ही नहीं जो कर्म बनावे। भारत ऐसा स्वर्ग था ना। 5000 वर्ष की बात है, महाभारत लड़ाई के बाद हठ से राज सिद्धि मिली थी। ... इस ज्ञान यज्ञ में सब स्वाहा हो जावेंगे। आग तो लगनी ही है। शास्त्र हैं क्यों नहीं; परन्तु इसमें कोई सार नहीं है। झूठे शास्त्र हैं। नम्बरवन बात श्री कृष्ण गीता का भगवान है, बिल्कुल रॉंग है। गीता के भगवान को श्री–श्री 108 ... रुद्रमाला तो उनकी है। वह है निराकार। ऊपर में मेरु भी दिखाते हैं ना। यह वैजयंती माला नहीं हुई है। इन्होंने स्वराज स्थापन किया, उसका फल मिला हुआ है। ..... का राज़ (भी) सिर्फ तुम ही जानते हो। मम्मा–बाबा है मुख्य, जिन्होंने बादशाही ली है, जिन्होंने मेहनत की है, वह नम्बरवन में हैं। 8 दा(नों) वा(ली) भी जपते हैं, 108 के भी जपते हैं। तुम समझते हो हम नम्बर..... हैं। वो (देवताएँ) हैं सतयुग आदि की प्रालब्ध। किसने और कब प्रालब्ध बनाई? ज़रूर कलियुग अंत में बनाई होगी। तो वह संगम हुआ ना। बाप कहते हैं मैं संगम युगे आकर तुमको राजयोग सिखाता हूँ। कितनी सहज समझने की बात है। माला भल फेरते रहते हैं; परन्तु कोई को पता नहीं है। तुमको समझाते रहते हैं, हाँ मेहनत भी करनी है। सुबह को उठकर बाप को याद करना है। इसी योग से ही विकर्म विनाश होंगे; परन्तु बहुत कम याद करते हैं। सिर्फ पंडित भी नहीं बनना है। सिर्फ औरों को समझाते रहो, नहीं। सिर पर पापों का जो बोझा बहुत है उनको योगबल से उतारना है। बड़ी मेहनत है। देखते हो ना, बाबा ने कितने ऑपरेशन कराय हैं। कर्मभोग है ना। छोटेपन में तो कुछ होता नहीं था। समझते हैं, अजन का हिसाब–किताब रहा हुआ है। पिछाड़ी में जब विनाश का समय होगा तब हिसाब–किताब खलास (हो)गा। बाप कितना सहज रीति से समझाते हैं। पढ़ना और पढ़ाना है। हाँ, मेहनत तो लगती है ही है। घड़ी–2 बुद्धि कहाँ भटकती है। बाप कहते, मुझ एक बाप को याद करो। तुम बी०के० की भी अवस्था कम हो जाती है। (भल) कोई भाषण बहुत अच्छा करते हैं; परन्तु अवस्था कुछ भी नहीं। ज्ञान तो बिल्कुल (सहज) है। बाकी (सिर) पर जो अनेक जन्मों का (बोझा चढ़ा) है वह (कैसे) उतरे? (यहाँ) तो ..... बनना है। अपने में कोई .....अवगुण ना हो। पहले अपनी जाँच करनी है। हमारे में (ही) विकार होगा तो (दूसरों) को तीर लग नहीं सकेंगे। पहले नम्बर में बच्चों को तो मेहनत करनी है। वह कोई करते नहीं है। योग में रहते (नहीं) हैं; इसलिए ताकत नहीं (आती) है। याद से ही ताकत बढ़ेगी। ज्ञान से (धन) होगा। पापों का बोझा कैसे उतरे, वह बु(द्धि) में आता नहीं है। पहले–2 सामने बिठाकर अशरीरी हो बनना है। सच्चा योग चाहिए तब ही उनको कशिश होगी। पहले–2 मेहनत यह है। पहला ज्ञान है मनमनाभव का, फिर मद्याजी भव; परन्तु बहुतों से मेहनत पहुँचती नहीं है, धक्के खाते र(हते हैं)। (मेहनत) करेंगे ..... दूसरों को करावेंगे। अपने शरीर को भी ..... है। बाबा कहते हैं मैं भी किसी कल्याण अर्थ प्रवेश कर शांति का जलवा दिखता हूँ। बच्चों द्वारा भी सर्विस करता हूँ। कहाँ मुरली भी जाय सुनाता हूँ। मैं जाकर मदद करता हूँ। पवित्रता ... मुख्य है। पहले है मनमनाभव। बुद्धियोग वहाँ लगा र(हे)। घर में बैठे हो तो भी बुद्धि में शिवबाबा की याद रहे। कहते हैं– बाबा, बहुत को(शिश) करते हैं; परन्तु भूल जाते हैं। अरे, बाप को तुम भूल जाते हो। लौकिक बाप आदि को कब भूल सकते हो? क्या तुम्हारा पति, जो तुमसे सगाई करते, उनको भूल जाते? वह पति तो गट्टर (में) डाल देते हैं, नगन करते हैं। यह तो तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बाप कहते हैं, इस गट्टर ... भूल जाओ..... में जाते–2 तुम क्या बन गए हो! पतित बन पड़े हैं। ल०ना० का जब राज्य था तो पावन थे ना। अभी (कह)ते हैं हम पतित हैं। शर्म आना चाहिए! हमारे बड़े पावन और हम पतित। सन्यासी किसको पावन थोड़े ही (ब)नाते हैं। हाँ, वह गट्टर से निकले हुए हैं। बाबा अब निकाल रहे हैं। यह बड़ी समझने की बातें हैं। पहले–(2) मनमनाभव। पापों का बोझा उतरने में टाइम लगता है। बीज और झाड़ का राज़ अथवा यह चक्र बुद्धि में रहना चाहिए। बाप कहते हैं मनमनाभव। पहले मुझे याद करो। यह है विचि(त्र) बाबा को याद करना है। कहते हैं– बाबा, हम हिरे हुए हैं चित्र को याद करने पर, आप कहते हो मैं स्टार हूँ, अब क्या करें? यह तो बड़ी सहज बात है

बाबा (तो) स्टार है। उनको कहते ही हैं रूहानी रॉकेट। सूक्ष्मवतन को भी छोड़ तुम बिल्कुल मूलवतन में (जाते हो)। आ(त्मा) रूपी रॉकेट जाता है। अब बाप कहते हैं तुमको मेरे पास आना है। मुख्य बात है मनमनाभव। सवेरे उठ बाबा (को) याद करो। बाबा की महिमा करो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। याद से ही विकर्म विनाश (होंगे)। ज्ञान से विकर्म विनाश नहीं होंगे। विकर्म जो मुख्य बात है वह याद से ही भस्म होंगे। इसलिए बाबा कहते हैं ..... कहो। भल ऐसे कहेंगे, कल्प पहले भी ऐसे स्प... में चले थे; परन्तु फिर भी पुरुषार्थ कराया जाता है। (पुरुषार्थ) को बढ़ाना है। बाबा तुमको सब सा... कराते हैं। जैसे काशी कलवट खाते हैं तो उस समय उनको सब ..... होता है। जितना जन्म रहा है वह पूरा दिखाते हैं। सब हिसाब चुक्तू कर देते हैं। (प)ाप की दुनिया में मनुष्यों (से) पाप ही बनते हैं। भक्तिमार्ग है ना। तुम बाप के बनते हो गोया बाप पर बलि चढ़ते हो। बाबा, हमारा तन–मन–धन सब आपका है। बरोबर आप विश्व के रचयिता हो। आपसे हमको नई दुनिया का वर्सा मिलता है। तो बाबा को याद करना पड़े ना। बाबा, आपसे हमको पवित्रता–सुख–शांति का वर्सा मिलता है पुरुषार्थ से। अज्ञान काल ही में होता है कोई बच्चे को 100 वर्ष में भी बाप से वर्सा नहीं मिलता हो(हैं) तो अंदर खार खाते रहते हो(हैं)। यह मरता ही नहीं है, फिर कोई युक्ति रचते हैं। ऐसे बहुत (हैं) बाप को जहर ..... देकर बाप खलास कर देते हैं। झूठा सर्टीफिकेट दे देते। ऐसे बहुत होते हैं। देखो, तुम्हारी मम्मा पास क्या पैसा था। कितना ऊँच बनती है! इसमें ..... बाप को याद करने की। ज्ञान तो सेकण्ड का है। पवित्र बनना, एक से बुद्धियोग लगाना, इसमें है मेहनत। पिछाड़ी में आने वाले जोर से मेहनत करेंगे। जोर से पुरुषार्थ कर तुमसे ऊँच चढ़ जावेंगे। जनक का दृष्टांत है ना। एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति; परन्तु वह फिर चंद्रवंशी में गया। सूर्यवंशी में जा ना सके। भल सब कुछ दे दिया; परन्तु बाबा काम में नहीं लगाते हैं। मेहनत करनी होती है। स्कूल में पढ़ते हैं, कितनी मेहनत करते (हैं)। पिछाड़ी में बड़ा जोर से ध्यान देते हैं कि पास हो जावे, नहीं तो 12 मास की कमाई चट हो जावेगी। फिर भी बाप कहते हैं याद करो। डंडा खाकर, सज़ा खाकर फिर थोड़े ही जाना चाहिए। बेइज्जती से जाने से फिर पद भी भ्रष्ट (हो) जाता है। योग का दान देना होता है। बाबा भी क्या करते हैं, मम्मा के पास जाते हैं। बाबा कहते हैं, मम्मा को योग का दान दो। मुरली थोड़े ही सुनाते हैं। बाबा कहते हैं, तुम और हम दोनों बैठ योग का दान देते हैं; क्योंकि योग से ही विकर्म विनाश होंगे। ज्ञान से तो धन मिलता है। बाप की याद सिवाय और कोई उपाय नहीं है जो विकर्म विनाश हो सके। प्राचीन योग योगेश्वर ने ही सिखाया है। कृष्ण कोई योगेश्वर, वो ना सिखलाने वाला, ना सीखने वाले हैं। अच्छा, आज तुम बच्चों को टोली खिलाते हैं जिसका नाम है पलंग टोल। स्त्री–पुरुष पलंग (पर) बैठते हो तो एक/दो को खिलाते हो। नाम ही है पलंग टोल। टोली खाने समय भी बाबा को याद कर खाना चाहिए। बाबा .....ते हैं तुम भी खाओ। कोई भी समझते हैं स्नान नहीं किया है तो .... खाना चाहिए। ..... कहते हैं; क्योंकि (विकार) में जाते हैं। लैट्री(न) में जाने स्नान करना पड़ता है। ..... बनना बुरा है इसलिए स्नान करते हैं। ..... बातें ना है तो फिर खाने ..... अपन को हमेशा क्लीयर कर देना चाहिए। कोई भी पाप कर्म इस जीवन में ..... तो सर्जन को सुनाने से हलका हो जावेगा। हे आत्मा! जो इस जन्म में विकर्म किए हैं वह सर्जन को सुना दो। तो वो .... हल्का हो जाय। सच बताने से जन्म–जन्मांतर ..... भी हल्का हो जावेगा। यह ज्ञान और योग ..... बाप के कोई ... सके। प०पि०प० जो अथॉर्टी है वो ही बैठ सभी वेदों–शास्त्रों आदि का सार बताते हैं। मनुष्य तो समझा ना सके। मीठे–2 सिकीलधे, काँटों से फूल बनने वाले फूलों में भी वैराइ(टी) ..... प्रकार का फूल है। कोई कैसा फूल बना है, कोई कैसा। पुरुषार्थ (कर)ते हैं गुलाब का फूल बनने जैसे। ..... ह्युमन फूल बनने वाले बच्चे ही ..... मनुष्य के लिए गाया जाता है। यह है काँटों का जंगल। (एक)/दो को काँटा लगाते, तंग क(र)ते रहते हैं। सन्यासी भी फिर भ्रष्टाचार से ही पैदा होते हैं, फिर सन्यास करते हैं। सतयुग में थोड़े ही सन्यास करते। वह है ... पवित्र दुनिया। वह है तुम्हारी 21 जन्मों की श्रेष्टाचार। अच्छा, यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ